



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अटल हिंद	03.07.2021	--	--

सज्जियों की संरक्षित खेती पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न

अटल हिंद साबरमती/हनुमान: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वायव्य क्षेत्र कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र के अंतर्गत सज्जियों की संरक्षित खेती पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत के 14-15-16-17 (प्रशिक्षण) डॉ. जयदीप मेहता ने बताया कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों को पुराने जमाने के विविध सज्जियों के वायव्य से सम्बन्धित तकनीक खरीने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लक्ष्मी सिंह व डॉ. लक्ष्मी कुमार ने किया। प्रशिक्षण में डॉ. जयदीप सिंह ने सज्जियों की वायव्य परत भूमि व खरी पट्टी के चुनाव के लिए-लक्ष्मी से आग्रह बताया। इसके अलावा मिट्टी व खरी के अंदर से की जाने वाली खेती की तकनीक भी बताया।

डॉ. सुनील ने खरी उपकरण का चयन व खरी क्षेत्र के बारे में बताया। डॉ. लक्ष्मी सिंह ने खरी की तकनीक की चयन व खरी नर्सरी तैयार करने के बारे में आग्रह की। डॉ. सुनील ने खरी के वायव्य परत की तकनीक को किसानों को प्रशिक्षण के माध्यम से बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

नम छोर

03.07.2021

—

—

संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों पर ध्यान देने की जरूरत : कुलपति

हिसार, 03 जुलाई (विशेष)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर चौधरी चरणसिंह ने कहा कि संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों (आर्गैनी) का ध्यान देने की जरूरत जरूरत है, क्योंकि बीते कुछ समय में इन तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। वे खेती को लागू को कम करते, मिट्टी के कार्बन मिश्रण में सुधार, पानी के बचपन को कम करते और मिट्टी के बचपन अदि में भारतपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे अंतर्देशीय संधान से एकरातु में कृषि विज्ञान केंद्रों को अनुसंधान अंतरात कार्यात्मक समीक्षा केंद्रक में बोल रहे थे। बैठक में अठारो अधीन, जोन-2 के लाल अने काले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्याधिकारी शामिल हुए। कुलपति प्रोफेसर चरणसिंह ने कहा कि किसानों को खेती सिखाने, सेवा संबंधित, वेद प्रशिक्षण, ट्रेनिंग और मिशन इतिहास जैसी तकनीकों को अद्यतन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके अलावा सेवा सेवा सेवा, काली अदि प्रशिक्षण, नई

सेवासेवा सिस्टम, नवी सेवा, सेवा, नई सेवा अदिसेवा, काली, नई सेवा अदि को बतला देना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकियों को बचपन रखने के लिए एकीकृत सरकारी प्रबंधन और कृषि अतिथिओं को उपार्थ के साथ-साथ तकनीकों का आसपास अद्यतन प्रबंधन और एकीकृत सेवा प्रबंधन की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के विज्ञान विज्ञानियों का अद्यतन करने हुए कहा कि भविष्य में भी वे विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों एवं विभिन्न प्रयासों को उन्नत किसानों को जानकारी किसानों तक लाना से उन्नत प्रौद्योगिकी किसानों का भला हो सके और विश्वविद्यालय अपने किसान शिक्षण संधान को और विस्तार बढ़ाए। इसके लिए प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, काली विभाग, अनुसंधान विभाग, काली कालन विभाग, कृषक, इनको अदि के साथ आसानी लानेसेवा करने पर और शिक्षा। उन्होंने कहा कि अलकतु परिवर्तन को अब दुनिया भर में खस सुखा के लिए

सबसे लंबी खसों के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें भारत को दुनिया के सबसे लंबी प्रथमिक देशों में से एक माना जाता है। अलकतु परिवर्तन का भारत में कृषि अद्यतन पर कृषि प्रकल्प, मिट्टी, पशुधन और बीजों का प्रत्यक्ष और अत्यंत प्रभावी के संधान से अलकतुपरिधीय कालकतु होने पर काफी प्रभाव पड़ता है। हमें अलकतु अनुसंधान विज्ञान लानेसेवा सेवा करने के लिए सभी राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय कालों के साथ अधिक सेना से जुड़ना होगा। साथ ही किसानों को समय पर सुखा, वैश्विक खाद के बचपन उपकरण के साथ पूरा परिवर्तन के आधार पर उपकरणों का संयुक्त उपकरण, अद्यतन प्रयास अद्यतन के लिए इन-सेवा कालन अद्यतन प्रबंधन एवं सेवा-उपकरण को सुनिश्चित करना होगा। विश्वविद्यालय निदेशक डॉ. रमणिसिंह ने बताया कि इस दौरान विज्ञानियों ने अपने-अपने केंद्रों को वर्ष 2020-21 के दौरान अलकतु अद्यतन की नई विश्वविद्यालय अद्यतनियों के बारे में समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	04.07.2021	-	-

चिंतन : खतरा बन रहा जलवायु परिवर्तन

प्रभावित देशों में भारत सबसे आगे, कृषि उत्पादन के साथ पशुधन पर भी पड़ रहा प्रभाव

सच कहूँ/सटीप मिहानर
हिसार।

जलवायु परिवर्तन को अब दुनिया भर में खतरा गुराह के लिए सबसे बड़े खतरे खतरे के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें भारत को दुनिया के सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से एक माना जाता है। जलवायु परिवर्तन का भारत में कृषि उत्पादन पर कृषि फसलों, मिट्टी, पशुधन और बीटी पर प्रभाव और अत्यन्त प्रभावों के कारण से जलवायु परिवर्तन जलवायु होने पर काफी प्रभाव पड़ता है। इसे जलवायु अनुकूल विकास तकनीक तैयार करने के लिए सभी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना होगा। खेती करने वालों को समय पर बुवाई, जैविक खाद के बड़े उपयोग के साथ सूखे प्रतिरोध के आधार पर उपजों का संतुलित उपयोग, स्थानीय फसल उत्पादन के लिए इन-सीटू फसल अन्वेषण प्रबंधन एवं जैव-उपज को सुनिश्चित करना होगा। इस मुद्दे पर सर्वोच्च को एमएचयू में कृषि विज्ञान केंद्रों को अनुकूल



"सटीप के दौरान संबोधित कराते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. अर, कम्पोज व अन्य।"

जोनाल जैविक सनोड बेंचक में चिंतन किया गया। बैठक में अरजी जोधपुर, जोन-2 के साथ अपने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए। संस्थाध्य संस्थाध्य प्रौद्योगिकियों को प्रभाव देना समय की मांग होती है। साथ में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. अर, कम्पोज ने कहा कि संस्थाध्य संस्थाध्य प्रौद्योगिकियों

(अरजीटी) पर ध्यान देने की जरूरत जरूरत है, क्योंकि मौसम समय में इन तकनीकों को बहुत अधिक जरूरत है। वे खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन सिंचन में सुधार, पानी के प्रभाव को कम करने और बिजली के खर्च को आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। किसानों को जैव डीजेल, लेजर तकनीक, वेड एवॉयंस, टिप और सिंचन इस्तेमाल जैसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना

चाहिए। इसके अलावा लेजर लैंड लेवला, गन्दी कटिंग मॉटर, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम, टवी मोडर, गिर, स्ट्रॉ मॉडर अरीयमेंट, खाई, लेवो सीड आदि को प्रभाव देना चाहिए। उन्होंने कहा कि परिवर्तित खेती को बचाए रखने के लिए एकीकृत खरपतवार प्रबंधन और कृषि अंतर्देशिकी तकनीकों के साथ-साथ तकनीकियों का आवागमन आधुनिक उपकरण और एकीकृत रूप प्रबंधन की आवश्यकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सत्यज्येय टाइम्स	03.07.2021	-	-

सब्जियों की संरक्षित खेती पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न

श्री. 22 जुलाई, सत्यज्येय टाइम्स, चण्डीगढ़, हरियाणा। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, हिसार के लोक संपर्क कार्यालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ।

यह प्रशिक्षण शिविर 22 जुलाई को शुरू हुआ। इस दौरान किसानों को सब्जियों की संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण का आयोजन श्री. 22 जुलाई, सत्यज्येय टाइम्स, चण्डीगढ़ के लोक संपर्क कार्यालय द्वारा किया गया।

इस दौरान किसानों को सब्जियों की संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण दिया गया।

श्री. 22 जुलाई, सत्यज्येय टाइम्स, चण्डीगढ़ के लोक संपर्क कार्यालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ।

यह प्रशिक्षण शिविर 22 जुलाई को शुरू हुआ। इस दौरान किसानों को सब्जियों की संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण का आयोजन श्री. 22 जुलाई, सत्यज्येय टाइम्स, चण्डीगढ़ के लोक संपर्क कार्यालय द्वारा किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

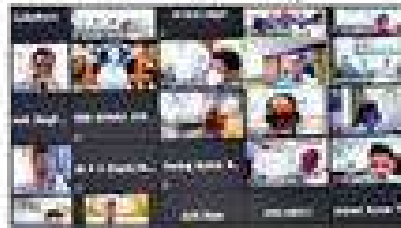
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	03.07.2021	--	--

मौजूदा समय में तकनीकों की बहुत जरूरत : प्रो. काम्बोज

एचएयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्चुअल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

समस्त हरियाणा ज्युन

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पी.आर. काम्बोज ने कहा कि संघर्षात्मक हरियाणा प्रौद्योगिकीयता (आरबीटी) पर ध्यान देने की बहुत जरूरत है, क्योंकि मौजूदा समय में इन तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। ये कृषि को मजबूत की जा सकती है, मिट्टी को संरक्षित करने में सुधार करने के प्रयास को बढ़ावा देने और मिट्टी के प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए। ये अतिरिक्त कार्यक्रम के तहत इन केंद्रों की वर्चुअल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक के सुचारु अंश पर विचार करेंगे। बैठक में अटारी कोषपुर, जोन-2 के अध्यक्ष होने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए।



कुलपति प्रोफेसर पी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसानों को जोड़े डिजिटल, लैंग्वेज, वेब, प्लेटफॉर्म, टिप और मिश्रण इतिहास जैसे तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अलावा लैंग्वेज लैंग्वेज, काली कृषि प्लेटफॉर्म, एग्री वैल्यूएड सिस्टम, एबी सीएस, रीम, एग्री सीएस एप्लिकेशन, साईबर, डीएन सीएस आदि को बढ़ावा देना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन ख़ाद्य सुरक्षा के लिए खतरा

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन को अब दुनिया भर में ख़ास सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा ख़तरा के रूप में देखना जा रहा है, जिससे भारत को दुनिया के सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से

एक बना जा सकता है। जलवायु परिवर्तन का भारत में कृषि उत्पादन पर कृषि पशुधारी, मिट्टी, पशुधन और बीटी पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों के माध्यम से अत्यंत ख़तरात्मक असर डाले जाने का बड़ा ख़तरा पड़ता है। इसे जलवायु अनुकूल विकास रणनीति तैयार करने के लिए सभी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों के साथ सहयोग बन लेना पड़ेगा। साथ ही किसानों को सशक्त बनाना, वैश्विक स्तर के बड़े उद्योगों के साथ मूल प्रोद्योग के आधार पर उद्योगों का संयुक्त उद्योग, राष्ट्रीय प्रमुख उद्योगों के लिए इन-सीडू बनाना आदि प्रबंधन एवं सेवा-उद्योग को सुदृढीकरण करना होगा। किसान शिक्षा निदेशक डॉ. रमनिधाम ने बताया कि इन सभी बातों के अलावा अतिरिक्त, अटारी कोषपुर, जोन-2 व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त उद्योगधारा में किया गया। उन्होंने बताया कि इन दौरान वैज्ञानिकों ने अपने-अपने केंद्रों को वर्ष 2020-21 के दौरान चलाने अद्युक्त की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बारे में सर्वोच्च रिपोर्ट प्रस्तुत की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	04.07.2021	-	-

जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

परिचयानुसार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण जी. अरुण, चारखोला ने कहा कि संसदजन संरक्षण प्रौद्योगिकियों (आरपीटी) पर ध्यान देने की बहुत जरूरत है, क्योंकि बीजसुत संकट में इन तकनीकों की बहुत अधिक उपयोग है।

ये बीजों की लागत को कम करने, मिट्टी के सस्ते निवेश में सुधार, पानी के सतह को कम करने और मिट्टी के सतह जल में सतहपूर्ण सुधारा प्रदान करने हैं। ये अतिरिक्त संसाधन से एमएच में कृषि विकास केंद्रों की सतहजन जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक के सुधारण अवसर पर विचार करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रसार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दोना २ भाग २२	५-७-२१	२	१-३

जलवायु परिवर्तन को खाद्य सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरे के रूप में देखा जा रहा
एचएयू में हुई जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक में वीसी ने रखे विचार

सिटी रिपोर्टर • जलवायु परिवर्तन को अब दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरे के रूप में देखा जा रहा है। जिसमें भारत को दुनिया के सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से एक माना जाता है। यह बात एचएयू वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने एचएयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की खर्नुएल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक के शुभारंभ पर रखी।

जलवायु परिवर्तन का भारत में कृषि उत्पादन पर कृषि फसलों, मिट्टी, पशुधन और कौटो पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों के माध्यम से अत्यधिक विध्वंसक जलवायु होने पर काफी प्रभाव पड़ता है। इन जलवायु अनुकूल विकास रणनीति तैयार करने के लिए सभी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहलों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना होगा। उन्होंने कहा कि संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों यानि आरसीटी पर ध्यान देने की जरूरत जरूरत

है, मौजूदा समय में इन तकनीकों को बहुत जरूरत है। उन्होंने कहा कि ये खेतों की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सुधार, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के कटाव आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली हैं।

बैठक में अटारी जोधपुर, जोन-२ के तहत आने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए। किसानों तक अधिक जानकारी पहुंचाने के लिए प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, बागवानी विभाग, पशुपालन विभाग, मछली पालन विभाग, कुशुको, इनको आदि के साथ आपसी तालमेल करने पर जोर दिया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने बताया कि इस समीक्षा बैठक का आयोजन निदेशालय, अटारी जोधपुर, जोन-२ व हर्कुल के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	4.7.21	9	8

**संसाधन संरक्षण
प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना
समय की भांग: काम्बोज**

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त

■ एचएचयू में
कृषि
विज्ञान
केंद्रों की
वर्चुअल
जोन्सल
वार्षिक
समीक्षा
बैठक

जरूरत है, क्योंकि मौजूदा समय में इन तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। ये खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सुधार, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के

कटाव आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

वे शनिवार को ऑनलाइन माध्यम से एचएचयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्चुअल जोन्सल वार्षिक समीक्षा बैठक के शुभारंभ अवसर पर विचार रखे। बैठक में अटारी जोधपुर, जोन-2 के तहत आने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए।

कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि किसानों को जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, वेड प्लांटिंग, ट्रिप और सीरिंग इरोगेशन जैसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक 15 जनवरी	4-7-21	4	7-8

संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना समय की मांग

जागरण संबोधिता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को अटारी जोधपुर, जोन-2 के तहत आने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिकों की बैठक आयोजित हुई। जिसमें विज्ञानियों ने आने वाले समय में कृषि के प्रबंधन को लेकर रणनीति साझा की। इसमें संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों के साथ कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, बागवानी विभाग, पशुपालन विभाग, मछली पालन विभाग, कृषको, इफको आदि के साथ आपसी तालमेल करने पर जोर दिया। विस्तार शिक्षा निदेशक डा. रामनिवास ने बताया कि बैठक का आयोजन निदेशालय, अटारी जोधपुर, जोन-2 व हरियाणा कृषि विवि के संयुक्त तत्त्वबंधन में किया गया है।

कुलपति प्रोफेसर बीआर कंचोज ने कहा कि संसाधन संरक्षण

प्रौद्योगिकियों (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त जरूरत है, क्योंकि मौजूदा समय में तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। ये खेती को लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सुधार, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के कटाव में भूमिका निभा सकता है। किसानों को जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेट प्लॉटिंग, ट्रिप जैसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके अलावा लेजर लीड लेवलर, मल्टी क्रॉप प्लॉटर्स, स्टा मैनेजमेंट सिस्टम, टर्बो सीडर, रोपर, स्टा स्प्रेडर अटैचमेंट, बाइंडर, हैपी सीडर आदि को बढ़ावा देना चाहिए। परिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए एकीकृत खरपतवार प्रबंधन और कृषि अभियंत्रिकी उपायों के साथ-साथ शाकनाशियों का आवश्यकता आधारित उपयोग और एकीकृत रोग प्रबंधन की आवश्यकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

सच कहूँ

04.07.2021

--

--

कोरोना : घटते जा रहे नए पॉजिटिव केस, बढ़ती जा रही लापरवाही

लापरवाही में सबसे आगे नेता व अधिकारी

सच कहूँ, राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस

विद्यार्थी दिवस का पर्व अतीत हो चुका है। इस अवसर के सफल होने का हमें गर्व है। कोरोना-19 की पहली लहर को हमें पता था कि यह हमारे बीच फैलने का संकेत है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया। हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया। हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया।



"राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के अवसर पर छात्रों के साथ फोटो खिंचा जा रहा है।"

सर्वप्रथम हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया।

दूसरे स्थान पर हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया।

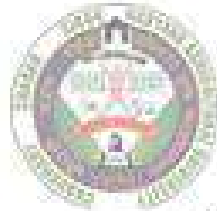
तीसरे स्थान पर हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया।

हमारे पास है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया। हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया।

■ एक नए मामले, दिल्ली में 97.82 प्रतिशत

दिल्ली में एक नए मामले की सूचना मिली है। इस मामले में 97.82 प्रतिशत लोग संक्रमित हुए हैं। यह संक्रमण दिल्ली के एक छात्र के पास से फैला है।

दिल्ली में एक नए मामले की सूचना मिली है। इस मामले में 97.82 प्रतिशत लोग संक्रमित हुए हैं। यह संक्रमण दिल्ली के एक छात्र के पास से फैला है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया। हमें पता था कि लापरवाही से यह संक्रमण फैल सकता है। हमने तुरंत कार्रवाई की और सभी छात्रों को जांच करवाया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	04.07.2021	--	--

संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रो. काम्बोज

हिसार, 3 जुलाई (राजकुमार) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों (आरपीटी) पर ध्यान देने की सख्त जरूरत है, क्योंकि मौजूदा समय में इन तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। ये खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सुधार, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के कटाव आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। वे ऑनलाइन कार्यक्रम से एचएयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्चुअल जूनल वार्षिक समीक्षा बैठक के शुभारंभ अवसर पर विचार रखे। बैठक में अटारी जोधपुर, जौन-2 के तहत आने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए। कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसानों को जैरो टिलेज, लेजर सेविलिंग, बेंड प्लान्टिंग, ड्रिम और सिप्रिंग इरीगेशन जैसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके अलावा लेजर लैंड लेवेलर, मल्टी क्रॉप प्लान्टर्स, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम, टर्नो सीडर, रोपर, स्ट्रॉ सीडर अटैचमेंट, फाईंडर, हेमपी सीडर आदि को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने कहा कि



समीक्षा बैठक के दौरान सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

परिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए एकीकृत खरपतवार प्रबंधन और कृषि अभियांत्रिकी उपकरणों के साथ-साथ शाकनाशियों का आवश्यकता

के लिए खतरा : उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन को अब दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरे के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें भारत को दुनिया के सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से एक माना जाता है। जलवायु परिवर्तन का

एचएयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्चुअल जूनल वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

अध्यातित उपरोक्त और एकीकृत रोग प्रबंधन की आवश्यकता है। इसके लिए प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, बागवानी विभाग, पशुपालन विभाग, मछली पालन विभाग, कृषकों, इंसकों आदि के साथ अलग-अलग तालमेल करने पर जोर दिया।

जलवायु परिवर्तन खाद्य सुरक्षा

भारत में कृषि उत्पादन पर कृषि फसलों, मिट्टी, पशुधन और कोटों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों के माध्यम से उणाकटिबंधीय जलवायु होने पर काफी प्रभाव पड़ता है। हमें जलवायु अनुकूल विकास रणनीति तैयार करने के लिए सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पहलों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

हैलो हिंसार

04.07.2021

--

--

संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज



जोधपुर, जौन-2 के तहत अपने कामे हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए। कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा

एचएयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की वचुअल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

सेक्टर अटैचमेंट, चांडर, हैप्पी सीडर आदि को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए एकीकृत खरपतवार प्रबंधन और कृषि अभियांत्रिकी उपकरणों के साथ-साथ तकनीकों का आवश्यकता आधारित उपयोग और एकीकृत रोग प्रबंधन की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के विस्तार वैज्ञानिकों का आवाहन करते हुए कहा कि भविष्य में भी वे विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों की जानकारी किसानों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचाए ताकि किसानों का भला हो सके और विश्वविद्यालय अपने किसान हितैषी लक्ष्य की ओर विस्तार बढ़ा रहे।

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों (आरसीटी) पर ध्यान देने की सलाह जरूरत है, क्योंकि मौजूदा समय में इन तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। ये खेती को

साल को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सुधार, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के कटाव आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। वे ऑनलाइन माध्यम से एचएयू में कृषि विज्ञान केंद्रों की वचुअल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक के शुभारंभ अवसर पर विचार रखे। बैठक में अदारी

कि किसानों को जोरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, वेड प्लॉटिंग, ट्रिप और स्पिन इरीगेशन जैसे तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके अलावा लेजर लीड लेवलर, मल्टी ब्लॉप प्लॉटर्स, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम, टर्बो सीडर, रीपर, स्ट्रॉ





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमा उमा ला	1-7-21	4	1-2

संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना समय की मांग : प्रो. कांबोज

हिसार। संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की भव्य जरूरत है, क्योंकि मौसमी समय से इन तकनीकों की बहुत अधिक जड़गत है। यह खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सहायक, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के अटचर आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह कहना है चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का। यह प्रतिष्ठान को संसाधन संरक्षण से एकरूप में कृषि विज्ञान केंद्रों की नई जल संचयन तकनीक समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में अटनी ओषध, जौन-2 के लान आने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए। विश्वविद्यालय के विचार वैज्ञानिकों से आश्वान कराते हुए कहा कि पशुधन में भी वे विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत निम्नों की जगह-तरीक-सामानों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचाएं ताकि किसानों को भला हो सके। व्यूरो



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब मेसरी	4.7.21	3	2-4

'संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना समय की मांग: प्रो. काम्बोज'

कृषि विज्ञान केंद्रों की वचुअल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

हिसार, 3 जुलाई (प्रेस): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी. आर. काम्बोज ने कहा कि संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों पर ध्यान देने की सख्त जरूरत है, क्योंकि मौजूदा समय में इन तकनीकों की बहुत अधिक जरूरत है। ये खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण में सुधार, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के कटाव आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

वे ऑनलाइन माध्यम से एच.ए.यू. में कृषि विज्ञान केंद्रों की वचुअल जोनल वार्षिक समीक्षा बैठक के शुभारंभ अवसर पर विचार रखे। बैठक में अटारी जोधपुर, जोन-2 के तहत आने वाले हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों के मुख्य वैज्ञानिक शामिल हुए। कुलपति प्रोफेसर बी. आर. काम्बोज ने कहा कि किसानों को जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लॉटिंग, ट्रिप और स्प्रींग इरीगेशन जैसी तकनीकों को



समीक्षा बैठक के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके अलावा लेजर लैंड लेवलर, मल्टी क्रॉप प्लांटर्स, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम, टर्बो सोइडर, रीपर, स्ट्रॉ स्प्रेडर अटैचमेंट, चाईइडर, हैप्पी सोइडर आदि को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए एकीकृत खरपतवार प्रबंधन और कृषि अभियांत्रिकी उपायों के साथ-साथ शाकनाशियों का आवश्यकता आधारित उपयोग और एकीकृत रोग प्रबंधन की आवश्यकता

है। विश्वविद्यालय के विस्तार वैज्ञानिकों का आश्वासन करते हुए कहा कि भविष्य में भी वे विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किरमों की जानकारी किसानों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचाएं ताकि किसानों का भला हो सके और विश्वविद्यालय अपने किसान हितैषी लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ता रहे। इसके लिए प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, बागवानी विभाग, पशुपालन विभाग, मछली पालन विभाग, कृषकों, इफको आदि के साथ

आपसी तालमेल करने पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन को अब दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरे के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें भारत को दुनिया के सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से एक माना जाता है। जलवायु परिवर्तन का भारत में कृषि उत्पादन पर कृषि फसलों, मिट्टी, पशुधन और कीटों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों के माध्यम से उष्णकटिबंधीय जलवायु होने पर काफी प्रभाव पड़ता है।

इसे जलवायु अनुकूल विकास रणनीति तैयार करने के लिए सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पहलों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना होगा। साथ ही फसलों की समय पर बुवाई, जैविक खाद के बढ़ते उपयोग के साथ मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का संतुलित उपयोग, स्थायी फसल उत्पादन के लिए इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन एवं जैव-उर्वरक को सुनिश्चित करना होगा। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने बताया कि इस समीक्षा बैठक में वैज्ञानिकों ने अपने-अपने केंद्रों की वर्ष 2020-21 के दौरान सालभर आयोजित की गई विस्तार गतिविधियों के बारे में समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की।